B - III
L - 10
M I H

रैयतवारी बंदोबस्त

तथ्यात्मक -

क्षेत्र • मद्रास एवं बाम्बे प्रांत तथा असम के कुछ भागों में।

• प्रायोगिक तौर पर 1791 में बारामहल क्षेत्र में लागू किया गया था। (तमिलनाडु)

कैप्टन रीड एवं थामस मुनरो (प्रशासनिक अधिकारी)

• ये बंदोबस्त (रैयतवारी) 1820 के दशक में मद्रास में लागू हुआ (थामस मुनरो द्वारा) था।

• बाम्बे प्रांत में एलिफिंस्टन ने लागू किया था।

• यह पूरे क्षेत्र के 51 प्रतिशत पर लागू था।

विशेषता :- (रैयतवारी बंदोबस्त) :-

• रैयतों को भूमि का मालिक माना गया और मालिकाना हक को वंशानुगत एवं हस्तांतरणीय बनाया गया।

• जमींदारी बंदोबस्त की तरह यहा भी यह प्रावधान था कि निर्धारित समय पर निर्धारित राजस्व यदि जमा नही करते हैं तो मालिकाना हक सरकार के द्वारा छीन लिया जाएगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- इस बंदोबस्त के अन्तर्गत प्रत्यक्ष तौर पर किसानों के द्वारा सरकार को भू-राजस्व की अदायगी का प्रावधान किया गया।
- इस बंदोबस्त के अन्तर्गत भू-राजस्व निर्धारण का तरीका सैद्धांतिक रूप से बेहतर था भूमि का वर्गीकरण सर्वेक्षण इत्यादि को आधार बनाया गया।
- कुल उपज में से लागत को निकालने के पश्चात जो अधिशेष बच जाता था उसका 50 प्रतिशत से अधिक सरकार राजस्व के रूप में नहीं लेगी लेकिन व्यवहार में इससे अधिक लिया गया।
- 30 वर्षों के अन्तराल पर भू-राजस्व के पुनःनिर्धारण का प्रावधान था
- सैद्धांतिक तौर पर प्राकृतिक आपदा के दौरान राहत का प्रावधान था लेकिन व्यवहार में यदा-कदा ही लागू हो पाया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

कारण :-

- सरकार का यह तर्क था दक्षिण भारत में जमींदार नहीं थे और टीपू सुल्तान ने भी किसानों से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित किया था

यह तर्क आंशिक रूप से सत्य है।

• वास्तव में अंग्रेजों ने निम्नलिखित कारणों से इस बंदोबस्त को लागू किया—

(i) जब वन क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित हुआ तब ब्रिटेन की परिस्थितियों परिवर्तित हो चुकी थी औद्योगिक क्रान्ति के कारण भारत को बाजार एवं कच्चे माल के स्रोत के रूप में स्थापित करने की योजना बनाई गई।

(ii) जमींदारी बंदोबस्त के अन्तर्गत भविष्य में आय बढ़ने की संभावना नहीं थी।

(iii) ब्रिटेन में उपयोगितावादी विचारधारा का प्रभाव था और प्रशासन पर भी इसका प्रभाव था यह विचारधारा जमींदारी बंदोबस्त के विरुद्ध थी

(iv) आय में अधिकाधिक वृद्धि के लिए।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

प्रभाव :-

सरकार पर प्रभाव :-

सकारात्मक

• जिन वास्तविक उद्देश्यों को ध्यान में रखकर सरकार ने इस बंदोबस्त को लागू किया उसमें एक बड़ी सीमा तक सफलता मिली।

नकारात्मक :

- प्रशासनिक खर्च में वृद्धि होने से सरकार पर आर्थिक दबाव भी बढ़ा।
- छोटे किसानों पर करों का बोझ अधिक था आगे चलकर विद्रोह एवं राष्ट्रीय चेतना के उदय का कारण बना।

किसानो पर प्रभाव :-

जमींदारी बंदोबस्त की तुलना में अपेक्षाकृत बड़े एवं मध्यम श्रेणी के किसानों के लिए यह बंदोबस्त लाभदायक रहा।

- भूमि पर मालिकाना हक को मान्यता मिलने से किसानों की आर्थिक सामाजिक स्थिति कुछ बेहतर थी। जबकि छोटे किसानों की दशा यहाँ भी दयनीय थी।
- उन पर करो का बोझ अधिक था इन किसानों को अलग-अलग अवसरों पर महाजनों से कर्ज लेना पड़ा, भूमि को गिरवी रखनी पड़ी और बेचनी भी पड़ी।

प्रश्न :- स्थायी बंदोबस्त की मुख्य विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख करें। इस बंदोबस्त ने जमींदार एवं किसानों को किस प्रकार प्रभावित किया?

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Advanced Learning Platform KHAN SIR

प्र०- जमींदारी एवं रैयतवारी बंदोबस्त का तुलनात्मक वर्णन करें?

प्रश्न- ब्रिटिश शासनकाल में भू-राजस्व बंदोबस्त के विकास को संक्षेप में बताए?

महलवारी बंदोबस्त

महल (भू-राजस्व की इकाई जैसे गांव या गांव का समूह)

तथ्यात्मक :-

क्षेत्र- मध्य प्रांत, उत्तर पश्चिम प्रांत, पंजाब (ग्राम-प्रधा)
कुल क्षेत्र का 30 प्रतिशत पर लागू

1819- हाल्ट मैकेन्जी -

- सर्वप्रथम मैकेन्जी ने इसे लागू करने का सुझाव दिया।
- 1822 एवं 1833 ई. में इसे लागू करने के लिए नियम बनाए गए।
- 1833 के नियम पर मार्टिन बर्ड का प्रभाव था
- मार्टिन बर्ड को उत्तर भारत में महलवारी व्यवस्था का प्रवर्तक भी कहते हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- रैयतों को भूमि का मालिक माना गया लेकिन भू-राजस्व को वसूलने के लिए गांव या गांव के समूह को एक इकाई माना गया ग्राम प्रमुख या जमींदार या लम्बरदार को भू-राजस्व संग्रह तथा सरकार के पास जमा कराने का दायित्व सौंपा गया।
- विशेषत: से संबंधित अन्य बिन्दु रैयतवारी बंदोबस्त से मिलते जुलते थे।

कारण :- रैयतवारी बंदोबस्त की तरह

Note :-
पहली बार महलवारी बंदोबस्त के अन्तर्गत भूमि के लिए मैप का प्रयोग किया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

कृषि का वाणिज्यीकरण

क्या है:-

ब्रिटिशकाल में बाजार या मुनाफे को ध्यान में रखकर कृषि के सन्दर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है विशिष्ट अर्थों में पूँजीवादी कृषि के सन्दर्भ में इसका प्रयोग होता है इसके अन्तर्गत कृषि का आधुनिकीकरण (उन्नत उपकरण, खाद, बीज अनुसंधान इत्यादि), राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार को ध्यान में रखकर कृषि, लागत एवं मुनाफा को ध्यान में रखकर कृषि पर अधिक बल दिया जाता है।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

क्यों:

- भू राजस्व का अत्यधिक दबाव एवं नगद के रूप में भू-राजस्व की वसूली।
- ब्रिटिश औद्योगिक क्रान्ति के कारण ब्रिटेन को बाजार एवं कच्चे माल की आवश्यकता।
- चाय, कॉफी, अफीम जैसे फसलों की खेती भी ब्रिटिश आवश्यकताओं से प्रेरित थी।
- रेलवे का प्रारम्भ भारत में, स्वेज नहर का संचालन इत्यादि कारणों ने भी भारत में वाणिज्यिकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया।

- समय-समय पर कुछ अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं ने भारत में वाणिज्यिकरण की प्रक्रिया को प्रभावित किया जैसे- अमेरिका में गृह युद्ध (1861-64)
- यूरोप में जनसंख्या वृद्धि।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR